मध्य. भार. आर्य भाषाएँ

- व्याकरणिक नियमों के कारण संस्कृत जन-सामान्य से दूर अपभ्रष्ट रूप में प्रचलित और संस्कृत शिक्षित समुदाय की भाषा रही।
- सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने लोकवाणी को राष्ट्रवाणी का रूप देकर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने में सफलता भाषा के तीन रूपों में प्राप्त हुआ

1.पालि(600ई.पू.से प्रथम शती तक)

पालिः-पालयति रक्षतीति पालि अर्थात् जिस भाषा से बुद्ध के वचनों की रक्षा हुई है वह पाली है।

- पाटलिपुत्र मुख्य क्षेत्र और मागधी से विकास
- सर्वप्रथम गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार
- लिखित रूप अशोक के शिलालेखों मे पालि से निकट
- बौद्ध धर्म की भाषा होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय महत्व
- चीन,जापान और लंका आज भी वहाँ सुरक्षित
- त्रिपिटक कथाएँ,अट्ठ-कथा जैसे बौद्ध धर्म के ग्रंथ
- प्रवृत्तिगत सरल भाषा
- श,ष,स में केवल स का प्रयोग, स्वरों की संख्या कम
- व्यंजनान्त पद स्वरान्त हो यथा भगवान का भगवा।
- नाम तथा धातु में द्विवचन समाप्त
- दंत्य ध्वनियाँ का मूर्धन्यीकरण हो गया।

प्राकृतः- म.भा आ,भाषा का दूसरा चरण

- महावीर जैन के उपदेशों के साथ ज्ञान और उपदेश की भाषा
- प्राकृत का अर्थ होता है सामान्य जन की भाष
- अत्यन्य ललित और मधुर भाषा
- साहित्य समृद्ध और शृंगार की दृष्टि से विशिष महत्व
- सेतु-बंध, गौडवहो,गाहा सत्तसई,बज्जालग्न प्रमुख रचनाएँ।
- कालिदास के नाटकों में निम्न वर्गीय पात्रों की भाषा प्राकृत
- पैशाची,अर्धमागधी,मागधी,शौरसेनी और महाराष्ट्री प्रमुख भेद
- सिन्ध,बलुचिस्तानऔर कश्मीर की भाषा पैशाची
- कल्हण की राजतरंगिणी पैशाची की रचना
- मगध और उसके पूर्व की भाषा मागधी

- दंत्य ध्वनियाँ का मूर्धन्यीकरण हो गया।
- अनेक साहितिक ग्रंथ लिखे गए।
- शौरसेनी कुरु और पंचाल जनपद की भाषा
- पश्चिमी हिंदी की बोलियों का विकास इसी से।
- श,ष,स में केवल स का प्रयोग
- महाराष्ट्रीः-प्राकृत का अधिकांश साहित्य महाराष्ट्री में
- हार्नल ने महाराष्ट्री का मतलब किसी क्षेत्र विशेष नहीं अपितु महान
  राष्ट्र से माना
- प्राकृत की सारी विशेषताएँ महाराष्ट्री में पायी जाती है।
- **अपभ्रंशः-** अपभ्रंश का अर्थ होता है बिगड़ा हुआ।
- 500ई. से 1000ई.तक
- अपभ्रंश को अवहट्ठ,ग्रामीण देसी,आभीरी,आभीरोक्ति भी कहा जाता
- डॉ.हरदेव बाहरी ने अपभ्रंश को आभीरों की भाषा कहा।
- डॉ.भोलानाथ तिवारी ने प्राकृत के आधार पर शौरसेनी,महाराष्ट्री,

- वैदिक से प्राकृत तक भाषाएँ संयोगात्मक थीं परन्तु अपभ्रंश वियोगावस्था ओर बढ़ी और आ.भा.आर्य भाषा तक यह नियम चल रहा है।
- लिग,वचन,कारक विभक्तियाँ कम हो गयीं। नपुंसक लिंग समाप्त हो गया।कारकों के संस्कृत चौबीस रूप केवल छः रह गए।

वचन दो।

अपभ्रंश में तद्भव और देशज शब्दों की संख्या बढ़ गयी।